नया धान विकसित करने वाला किसान गुमनामी में

बाबा मायाराम

छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध चावल है एचएमटी। बहुत कम ही लोगों को मालूम होगा कि यह छत्तीसगढ़ में महाराष्ट्र से आया है। इसे एक बेहद मामूली किसान ने विकसित किया है जिसका नाम है दादादी रामाजी खोब्रागडे। एचएमटी चावल का इस्तेमाल करने वाला आम आदमी उनके बारे में न जाने यह तो समझ में आता है लेकिन धान के अनुसंधान में लगे विश्वविद्यालय के लिए भी यह नाम अजनबी हो, तो अचरज की बात है। दादाजी खोब्रागडे की कहानी इस बात की एक झलक है कि फसलों की अलग-अलग किस्मों का संरक्षण और संवर्धन करने वाले किसानों की पेटेंट के इस युग में क्या हैसियत है?

महाराष्ट्र के एक छोटे-से गांव में एक छोटे किसान हैं दादाजी रामाजी खोब्रागडे। देश के लाखों किसानों की तरह वे भी अपने खेत में नए-नए प्रयोग करते थे। इस प्रक्रिया में उन्होंने धान की नई और अधिक उपज देने वाली किस्म खोजी और उसे विकसित किया। ये धान था एचएमटी जो आज महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और आंध्रप्रदेश में बहुतायत में उपयोग किया जाता है। लेकिन दुर्भाग्य से इस धान को विकसित करने वाले किसान की हालत में कोई सुधार नहीं आया है और वह आज भी जमीन के अपने छोटे-से टुकड़े पर गुज़र कर गुमनामी की ज़िन्दगी जी रहा है। अलबत्ता, पंजाब राव कृषि विद्यापीठ, अकोला ने इस पर अपना लेबल लगाने के लिए किसान के अनुसंधान के नाम पर धान की इस किस्म के बीज ले लिए और उसे 'शुद्ध' कर पीकेवी-एचएमटी के नाम से अधिकृत रूप से जारी कर दिया। किसान की खोज और योगदान का उल्लेख तक नहीं किया गया।

महाराष्ट्र के चंद्रपुर ज़िले के नागभिड तालुका के नांदेड गांव के करीब डेढ़ एकड़ वाले किसान दादाजी रामाजी खोब्रागडे ने खेती करते हुए अपने अनुभव और पारखी दृष्टि से 1983 से 1989 के दौरान धान की ऐसी किस्म विकसित करने में सफलता पाई जो ऊंचे दर्ज़े की अधिक उपज देने वाली थी। वर्ष 1983 में धान की पटेल-3 किस्म के खेत से खोब्रागडे ने चुनकर एक ही पौधे से तीन पीली पकी बालियां छांटी (इस पद्धति को वैज्ञानिक अपनी भाषा में प्योर लाइन सिलेक्शन कहते हैं) और इन्हें प्लास्टिक बैग में रख लिया। अगले साल उन्होंने इस बीज को खेत के बीचो-बीच बो दिया क्योंकि उनका खेत जंगल के पास था और फसल को जंगली जानवर नुकसान पहुंचाते थे। उन्होंने इसमें ज़्यादा पैदावार पाई, और इसका बीज सुरक्षित रख लिया। अगले साल यही प्रक्रिया फिर दोहराई और पकने पर जब चावल पकाकर खाया तो वह पटेल-3 से ज़्यादा स्वादिष्ट था।

धान की पटेल-3 किस्म का विकास एक वैज्ञानिक किसान ने देहरादून बासमती की एक प्रजाति से चुनाव प्रक्रिया द्वारा किया था, जो किसानों के बीच काफी प्रचलित थी और उसका बाज़ार में अच्छा भाव भी मिल रहा था। बाज़ार में इस चावल की मांग अधिक थी। इस किस्म को लंबे समय तक अपने खेत में उगाकर लगातार निरीक्षण और अध्ययन कर खोब्रागडे ने एचएमटी किस्म तैयार की।

इस किस्म की गुणवत्ता और उत्पादकता को देखकर आस-पड़ोस के किसान भी खोब्रागडे से बीज लेकर अपने खेत में उगाने लगे। ज़्यादा उपज होने पर इस बार अपने ही गांव के भीमराव शिंदे को भी करीब एक क्विंटल बीज दिया। भीमराव ने अपने खेत में इसे लगाया तो अच्छा

उत्पादन हुआ। एक क्विंटल धान चार एकड़ में बोने पर उत्पादन करीब 75 क्विंटल हुआ। अपनी ज़रूरत से ज़्यादा धान होने पर शिंदे इस धान को बेचने के लिए तलौदी कृषि उपज मंडी लेकर गए। इस तरह पहली बार खोब्रागडे का धान बाज़ार में पहुंचा।

जब 1990 को तलौदी मंडी में धान का बोरा खुला तो व्यापारियों की आंखें चमक गई। वे पूछने लगे यह कौन सी किस्म का धान है? शिंदे ने बताया कि उनके गांव के एक छोटे काश्तकार ने इस धान को विकसित किया है। शिंदे की बात पर व्यापारियों को भरोसा नहीं हुआ। उन्होंने इस धान को लेकर दूसरे धान से मिलान किया पर उनसे यह धान मेल नहीं खाया। व्यापारी परेशान हो गए। उनकी चिंता यह थी कि इस धान का कोई नाम नहीं है। इसे कैसे बेचा जाए? क्योंकि बिक्री से पहले मंडी के रजिस्टर व रसीद में इसकी किस्म का नाम दर्ज कराना ज़रूरी होता है। सो व्यापारियों ने इस धान को एक लोकप्रिय कलाई घड़ी का नाम - एचएमटी - दे दिया।

यह किस्म अपनी मूल किस्म की तरह लेकिन कुछ भिन्नता लिए हुए महीन, ज़्यादा उपज और संभावना वाली साबित हुई। किसानों और उपभोक्ताओं ने इसे बेहद पसंद किया। इससे इस धान को अच्छा मूल्य मिलना निश्चित हो गया। दो वर्षों में धान की यह किस्म किसानों में काफी लोकप्रिय हो गई। बाज़ार तथा उपभोक्ताओं में उसकी खासी मांग देखी गई। महीन चावल होने से व्यापारिक मांग की संभावना को देखकर इस किस्म को मिल वालों ने भी क्षेत्र में फैलाया।

वर्ष 1999-2000 तक नागपुर संभाग के नागपुर, भंडारा और गड़चिरौली में छा गई और धीरे-धीरे छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मध्यप्रदेश और आंध्रप्रदेश में फैल गई है। एचएमटी में से नांदेड 92, नांदेड हीरा, विजय नांदेड, दीपक रत्न, डी.आर.के. आदि किस्में विकसित हुईं। इसके अलावा नांदेड चिन्नौर किस्म भी वे विकसित कर चुके हैं।

विदर्भ में एचएमटी की मूक क्रांति के कारण क्षेत्र में स्थित पंजाबराव कृषि विद्यापीठ, अकोला पर किसानों की मांग के मद्देनज़र इसको अधिकृत रूप से जारी करने का दबाव भी बनने लगा। विद्यापीठ के दो कृषि वैज्ञानिक वर्ष 1994 में प्रयोग और अनुसंधान के लिए खोब्रागडे से उस धान के बीज ले गए। इसे उन्होंने लिखित रूप से स्वीकार भी किया है। बाद में वैज्ञानिकों ने दावा किया कि उन्होंने उस धान की किस्म को शुद्ध बनाया। शुद्धिकरण के बाद पंजाबराव कृषि विद्यापीठ अकोला ने उसे पीकेवी-एचएमटी का नाम दिया तथा 1998 में यह प्रजाति अधिकृत रूप से जारी की। यह बीज राज्य बीज निगम के ज़रिए बेचा जा रहा है। दूसरी ओर, दादाजी खोब्रागडे इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करने के बावजूद आज भी उसी हालत में गुमनामी की ज़िन्दगी जीने को मजबूर हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***